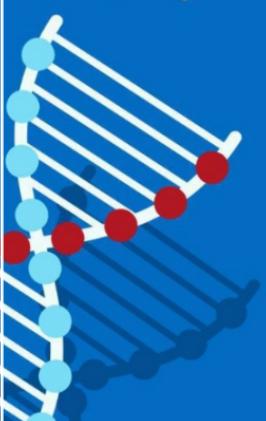


स्वेट मार्डेन



संकल्प, आत्मविश्वास

और

सफलता





स्वेट मार्डेन

संकल्प, आत्मविश्वास और सफलता

डॉ. ऑरिसन स्विट मार्डेन, एक अमेरिकी प्रेरणादायक लेखक थे, जिन्होंने जीवन में सफलता प्राप्त करने के बारे में काफी लेख लिखा और 1897 में उन्होंने 'सफलता पत्रिका' की स्थापना की। उनके लेखन सामान्य-ज्ञान सिद्धांतों और गुणों पर चर्चा करते हैं, जो कि एक सफल जीवन के लिए तैयार होते हैं। उनके कई विचार 'चू थॉट दर्शन' पर आधारित हैं। उनकी पहली पुस्तक 'पुशिंग टू द फ्रंट' जो कि 1894 में प्रकाशित हुई थी, एक सर्वश्रेष्ठ-विक्रेता पुस्तक बन गई। बाद में मार्डेन ने प्रति वर्ष दो खिताब औसत और 50 से अधिक किताबें प्रकाशित की।

“यदि कष्ट को हँसते-हँसते सहन किया जाये तो वह भी सुखद हो जाता है। पर यह तभी हो सकता है तब कम को महान बना दिया जाये।” —स्वेट मार्डेन

“व्यक्ति यदि गरीब भी है और उसके पास आत्मविश्वास है तो वह आत्मविश्वास उसकी पूँजी है और इस पूँजी से वह सब कुछ पैदा करने के लिए ऐसे कार्य कर सकता है जिन्हें धनवान व्यक्ति भी करने में असमर्थ रहते हैं।” —स्वेट मार्डेन

स्वेट मार्डेन

संकल्प, आत्मविश्वास और सफलता

“क्रोध, धृणा, अहम्, मोह, आसक्ति ऐसे भाव हैं, जो मनुष्य की सोचने-समझने की शक्ति समाप्त कर देते हैं और वह खुद अपना विनाश कर लेता है। इस विनाश से बचने के लिए मनुष्य को आत्ममंथन करना चाहिए।” —स्वेट मार्डेन



संसार में बहुत लोग ऐसे हुए हैं, जिन्होंने किसी संकल्प या प्रण को पूरा करने के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया और अपने लक्ष्य को सफलता के साथ पूरा करके ही छोड़ा।

विश्वासपूर्वक यह कहने वाले बहुत कम लोग हैं, जो निश्चयपूर्वक कह सकते हैं कि वे जो करना चाहते हैं उसे कर ही सकते हैं। वे जिस काम को करने का प्रण करते हैं, पूरा करके छोड़ते हैं जिन्हें अपनी शक्ति पर विश्वास है, संकल्प और प्रतिज्ञा को पूरा करने का साहस और विश्वास है। ऐसे लोग दृढ़संकल्पी होते हैं, वे जिस काम को हाथ में लेते हैं, उसे पूर्ण करके छोड़ते हैं।

उत्साह से भरे निश्चय और अपने निर्णय को मन में दोहराते रहने से, प्रण को पूरा करने की शक्ति-प्राप्त होती है। व्यक्ति कोई भी महान कार्य तभी कर सकता है, जब वह उसके लिए संकल्प करता है, प्रण करता है और उसे पूरा करने का पूरा-पूरा प्रयास भी करता है। अपने निश्चय को जो बार-बार दोहराता है उसकी महान शक्ति जागृत हो उठती है। तब उसका निर्णय भी नहीं बदलता और आत्मविश्वास भी पैदा होता है।

जब आपके मन में यह भावनाएँ आती हैं कि आपको स्वयं पर विश्वास हैं, ईश्वर पर पूरा भरोसा है, आप जो चाहेंगे कर देंगे इससे आपकी कार्य शक्ति में भी वृद्धि होती है और उत्साह भी बढ़ता है।

आत्मविश्वास जितना भी अधिक होगा, सफलता उतनी ही अधिक होगी। दृढ़ निश्चय की मात्रा के अनुसार ही सफलता की मात्रा होती है। कछ लोग कभी भी किसी बात को निश्चयपूर्वक नहीं करते। वे सदा ‘अनिश्चय’ की स्थिति में बातें करते रहते हैं।

वे नहीं जानते कि ‘अगर’ ‘मगर’ और भाग्य की। बातों से इच्छाशक्ति कमजोर होती है। अतः कभी, यदि ‘परंतु’ आदि शब्दों का बार-बार प्रयोग न करें। इनसे अनिश्चय झालकता है। कार्य सम्पादन शक्ति और निश्चय तथा आत्मविश्वास कम होता है।

“स्वस्थ चिंतन मनुष्य में आत्मविश्वास की शक्ति भर देता है और वह सफलता की ओर निरंतर अग्रसर होता रहता है। इसके विपरीत चिंताग्रस्त व्यक्ति रोगों से ग्रस्त, निराश और हताश होता है। उसका जीवन कष्टों से परिपूर्ण होकर नष्ट हो जाता है।” —स्वेट मार्डेन

बहुत-से लोग भगवान पर बात डालते हैं। वे काम से बचने के बहाने के रूप में या आदतवश सदैव भगवान पर बात डालकर यह कहते हैं कि ‘यदि ईश्वर को मंजूर हुआ तो...’, ‘यदि उसने चाहा तो कर दूँगा, वरना...’ इस तरह के लोगों में आत्मविश्वास नहीं हैं। उनमें संकल्प की कमी है। ऐसे लोगों का तर्क खोखला है। उनके इस प्रकार के वचन अनुचित हैं और उनके आत्मविश्वास, इच्छाशक्ति, संकल्प और निश्चय को कमजोर करते हैं। अतः ‘शायद’ और ‘कोशिश करूँगा’ जैसे शब्दों का प्रयोग कम करें।

आप उस परमपिता परमेश्वर के अंश हैं, जो सृष्टि का कर्ता है, रंचनाकार है। जिसने आपको सम्पूर्ण और श्रेष्ठ बनाया है। आप तो साक्षात् उत्साह है, साहस और शक्ति हैं।

आपके पास क्या नहीं है? शक्ति, बुद्धि, ज्ञान और प्रयत्नों के द्वारा आप संसार के सभी कार्य कर सकते हैं। जो ईश्वर सृष्टि की असीम धन-सम्पदाओं का रखयिता है। जो साक्षात् बल, उत्साह, साहस और ज्ञान है, उसकी इच्छा तो यही है कि मानव महान से महान कार्य करके इस सृष्टि को और सुंदर बनाए।

“जिस प्रकार अलमस्त हाथी पर काबू पाने के लिए महावत अंकुश का प्रयोग करता है। उसी प्रकार को अपनी दृष्टिभावनाओं पर काबू पाने के लिए आत्मसंयम रूपी अंकुश का इस्तेमाल करना चाहिए।” —स्वेट मार्डेन

सदैव अपने निश्चय पर दृढ़ रहिये। आपकी हर बात पत्थर की लकीर होनी चाहिए। जो आप कह दें, वह करके रहें। आपकी कथनी और करनी एक हो।

अपनी सफलता के बारे में भी संदेह करके यह न कहें कि कभी-न-कभी सफलता मिल जाएगी, बल्कि यह कहें कि सफलता तो मिलेगी ही, वह तो: निश्चित है। आप सफल व्यक्ति हैं, सफलता पर आपका पूरा अधिकार है। आप सुखी और प्रसन्न हैं, सुख और प्रसन्नता आपका अधिकार है।

आपका कर्तव्य और धर्म है कि आप दूसरों को भी सुखी, प्रसन्न और प्यार से रखेंगे।

सफलता की बातें करना आपकी आदत होनी चाहिए। आपका यह दावा होनी चाहिए कि आप जो एक बार लेते हैं या संकल्प करते हैं या प्रतिज्ञा कर लेते हैं, उसे निश्चित रूप से पूरा करने हैं। इसमें दो राय नहीं होनी चाहिए कि आप सदैव अपनी इच्छा और कल्पना को कार्यरूप में परिणत करके छोड़ते हैं।

मन की भावनाओं में विराट शक्ति होती है।

जैसा आप सोचते हैं वैसा बनते हैं। अतः सदैव यही मानिए कि ‘जैसा मुझे होना चाहिए मैं वैसा नहीं हूँ’ मुझमें कोई अपूर्णता और असमर्थता नहीं है। जब आपके मन में यह भावनाएँ आती हैं कि आपको स्वयं पर पूर्ण विश्वास है, ईश्वर पर पूरा भरोसा है, आप जो चाहेंगे कर देंगे इससे आपकी कार्य शक्ति में भी वृद्धि होती है और उत्साह भी बढ़ता है।

अनिश्चय निराशा को जन्म देता है।

अतः जब आप कोई कार्य करना चाहते हैं, तो प्रतिज्ञा करें कि आप उसे करके रहेंगे। साथ ही विश्वास और आशा भी हो कि कार्य होगा अवश्य, रुक नहीं सकता।

आत्मविश्वास और संकल्प में बड़ी शक्ति है।

आत्मशक्ति को तो विश्व में अद्भुत शक्ति कहा गया है। आत्मबल और इच्छाशक्ति तो सम्मोहन के आधार हैं। आप बहुत सेवेरे उठना चाहते हैं, तो सोने से पहले ही कहिए, अब आप क्या नहीं कर सकते हैं? आप जो भी करना चाहेंगे, कर सकेंगे, क्योंकि जीवन में सभी कुछ करने की शक्तियाँ प्राप्त करने के सारे रहस्य आप जान चुके हैं। अपने जान लिया है जान भी लीजिए कि जीवन में विचारों का बहुत बड़ा स्थान है। विचार या कल्पनाएँ ही पहले बनती हैं, उन्हें कार्यरूप में बाद में परिणत किया जाता है। अतः अपने विचारों को सदा मजबूत बनाइए। परिश्रम से कार्य करते रहें और बराबर यही आशा और विश्वास रहे कि आपकी जो इच्छा है और जो आप करने जा रहे हैं, वह कर सकते हैं और करके ही रहेंगे।

आपका साहस सदा आपके साथ रहना चाहिए। कभी भय या आशका आपके निकट नहीं आनी चाहिए। आत्मविश्वास की शक्ति के विषय में भी आपने जान लिया है, जो कि एक बहुत बड़ी शक्ति है। याद रहे यह आत्मविश्वास ही इच्छाशक्ति का स्रोत है यदि आत्मविश्वास दृढ़ होता है, तो मनुष्य सभी कार्य करके सबको चकित कर सकता है। असंभव को भी यह आत्मविश्वास की शक्ति संभव बना देती है।

“यदि कष्ट को हँसते हँसते सहन किया जाए तो वह भी सुखद हो जाता है। पर यह तभी हो सकता है, तब कम को महान बना दिया जाए।” —स्वेट मार्डेन

दुविद्या, भय, अहंकार और क्रोध मनुष्य की प्रगति के रास्ते में बाधा डालते हैं; इनसे दूर रहिए। आप जान चुके हैं कि जहाँ ये हैं, वहाँ सफलता नहीं है। इन्हें दूर करने के बाद आप क्या नहीं कर सकते?

जितने भी महान कार्य करने वाले हुए हैं उनमें आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा हुआ था। उन्हें अपनी कार्यक्षमता, योग्यता और शक्ति पर पूरा-पूरा भरोसा था। आपको चाहिए कि आप भी यदि जीवन में बड़े-बड़े काम करना चाहते हैं, ऊँचाइयों को छूना चाहते हैं, तो अपने अंदर आत्मविश्वास भरिए। आपको स्वयं पर भी भरोसा होना चाहिए और अपने काम पर भी।

जो लोग ऐसे कार्यों को कर लेते हैं, जिनमें दूर-दूर तक असफलताएँ ही दिखाई देती थीं और सब यही सोचते थे कि वह इस काम को कर ही नहीं सकेगा, किंतु अपने प्रबल आत्मविश्वास के सहारे उन्होंने वे कठिन कार्य भी कर दिए और उन परिस्थितियों में कर दिए, जो प्रतिकूल थीं। वे गरीबी में पैदा हुए, लेकिन उनकी सफलता का राज था उनका दृढ़ आत्मविश्वास।

अनेक कठिनाइयों, रुकावटों और विरुद्ध परिस्थितियों के बावजूद उन्होंने अपना रास्ता नहीं छोड़ा और वे इस विश्वास को लिए बढ़ते रहे कि उन्हें सफलता प्राप्त ही होगी। इसलिए उन्हें सफलता मिली संसार उनके परिश्रम के परिणामस्वरूप मिले फल को खाता है। आज हम देखते हैं कि विज्ञान ने हमें ऐसे-ऐसे अद्भुत आविष्कार दिए हैं। विज्ञान के ये करिश्में कुछ लोगों के परिश्रम और त्याग का फल है, जिन्होंने अपना जीवन मानवता की भलाई में लगाया और कठिनाइयाँ झेलते हुए हमारे मानव समाज के लिए ऐसे आविष्कार दिए। वे सब वैज्ञानिक प्रबल आत्मविश्वास के कारण ही तो ऐसे अद्भुत आविष्कार कर सके हैं। उनके सामने बहुत कठिनाइयाँ आईं, रुकावटें आईं, दुःख झेलने पड़े, परंतु वे लाख विपत्ति आने पर भी निरुत्साहित न होते हुए अपने कार्यक्षेत्र में डटे रहे। अंत में उनकी जीत हुई, विपत्तियाँ हारीं। संसार ने उन्हें माना। आज हम उन्हीं के दिखाए मार्ग पर चलते हैं, उन्हीं की बनाई चीजों से सुख-लाभ कर रहे हैं।

जेम्सवाट ने भाप की शक्ति का पता लगाया। उसी से जॉर्ज स्टीवेंसन ने प्रथम रेल का इंजन बनाया। आज रेलगाड़ी से जो लाभ उठाते हैं, वह जॉर्ज स्टीवेंसन जैसे लोगों के परिश्रम का फल है।

‘राईट’ बंधुओं ने हवाई जहाज की खोज में प्राणों की परवाह नहीं की ऐसे लोग आत्म विश्वासी होते हैं। बिना आत्मविश्वास के तो मानव दो कदम भी नहीं बढ़ सकता।

आप जब घोर विपत्तियों में घिर जाते हैं, चारों ओर निराशाएँ ही होती हैं। अपने सगे-संबंधी और मिंत्र तक साथ छोड़ देते हैं, आप महसूस करते हैं कि भी कोई आपको अपना नहीं रहा है, सब स्वार्थों से भरे हैं, न धन रहा है, न संपत्ति है, परिवार की नाव अभावों में घिरी है, आपके सामने सब रास्ते बंद हो गए हैं, तब एक ही चीज है जो मार्ग में प्रकाश करती है, रास्तों को खोलती है, सहारा देती है, आगे बढ़ने को प्रेरित कर सकती है, शक्ति और साहस को बढ़ा सकती है,

वह है प्रबल आत्मविश्वास। आपके पास यह है, तो यह कभी धोखा नहीं देगा। जब तक आप चाहेंगे, यह साथ देगा। आप स्वयं ही इसका साथ छोड़ देंगे, तो इसका क्या दोष?

जो किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास को नहीं छोड़ते वे ही संसार में सम्मान के पात्र बनते हैं। संसार उन्हीं को पूजता है, जो स्वयं को मिटने तक आत्मविश्वास पर दृढ़ रहते हैं।

मनुष्य में यदि आत्मविश्वास है, तो वह अकेला ही अनेक कठिनाइयों का सामना करने को सदैव तत्पर रहता है।

व्यक्ति यदि गरीब भी है और उसके पास आत्मविश्वास है तो वह आत्मविश्वास उसकी पूँजी है और इस पूँजी से वह सबकुछ पैदा करने के लिए ऐसे कार्य कर सकता है, जिन्हें धनवान व्यक्ति भी करने में असमर्थ रहते हैं।

आपके पास आत्मविश्वास की पूँजी है, यह पूँजी सबसे महत्वपूर्ण है, इससे बढ़कर कोई पूँजी नहीं हो सकती। बहुत-से लोग सदा असफल, निर्धन, हीन और दबे ही रहते हैं। उन्हें न तो ज्ञानाज में सम्मान मिलता है और न कोई सुख-सुविधा।

इसके कई कारणों में से प्रमुख कारण यही है कि उन्होंने स्वयं को नहीं पहचाना और अपने अंदर मौजूद गुणों के बीज को नहीं देखा जिसके विकसित करके वे भी ऊँचे उठ सकते हैं।

बहुत-सी जातियाँ इस युग में भी पिछड़ी हुई हैं। आज भी वे सम्यता से दूर हैं। वे आधुनिक सुख-सुविधाओं से वंचित हैं। क्यों? इसका कारण यह है कि उन जातियों ने स्वयं ही उठने के प्रयास नहीं किए हैं। उनकी धारणा ही ऐसी है। मानव के अंदर विद्यामान ईश्वरीय अंश को वे नहीं पहचान पाते।

बहुत-सी जातियों पर समाज की दूसरी जातियाँ अत्याचार करती हैं और उन्हें दबाती रहती हैं। ऐसी दबी हुई जातियाँ भी पिछड़ी रहती हैं, शोषण का शिकार होती रहती हैं। वे जातियाँ उठने का प्रयास नहीं करती। सदियों से जुल्म और अन्याय सहने की वे आदी हो गई हैं। वे जातियाँ चाहकर भी नहीं उठ पाती हैं, क्योंकि उनके अंदर भी आत्मविश्वास का स्रोत सूख चुका होता है। आत्मविश्वास को बिना जगाए कोई जाति नहीं उठ सकती। जिस जाति का आत्मविश्वास जाग उठता है वही आगे बढ़ती है। वही अपने अधिकारों को प्राप्त करती है, अपना सम्मान कायम करती है, अपनी योग्यता का परिचय देती है और संसार उन्हीं को जानता है। आत्मविश्वास की शक्ति के कारण ही छोटे-से इंग्लैंड के लोगों ने विश्व के अधिकांश भाग पर शासन किया।

जब आप यह मान लेते हैं कि आप में शक्ति भी है और योग्यता भी और अपनी शक्ति और योग्यता पर आपको पूरा विश्वास है, तो आपकी मानसिक शक्तियाँ भी इससे प्रबल हो जाती हैं।

बहुत-से ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनमें सारी शक्ति होती है, बस आत्मविश्वास नहीं होता है। इसी एक कमी के कारण वे पिछड़े जाते हैं। ऐसे लोग यदि आत्मविश्वास भी पैदा कर लें या बढ़ा लें, तो उनकी सफलता में कोई भी संदेह नहीं रहता। आप किसी डरपोक और शंकालु व्यक्ति को प्रतिदिन उत्साहित करने लगें, उसकी कार्यक्षमताओं के विषय में कहते रहें कि वह बहुत कुछ करने के योग्य है, उसमें कोई कमी नहीं है, वह योग्य है, सबकुछ कर सकता है, करने की शक्तियाँ हैं, तो आप एक अच्छा परिणाम ही देखेंगे। वह साहसी और आत्मविश्वासी हो जाएगा। फिर वह बड़े-बड़े कार्य कर सकता है। जिन्हें कर डालने की न आपको आशा थी, न उसे।

आपका जीवन वही होता है जो आपका आदर्श है। आप जो बनना चाहते हैं, वही आप बनते जा रहे हैं, और वही आप हैं।

स्वयं को पहचानते हुए आप आगे बढ़े। आत्मशक्तियाँ तभी बढ़ती हैं, जब आप स्वयं को जानते हैं और आपके अंदर आत्मविश्वास है।

आप इसे बढ़ा सकते हैं। यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जो जन्म में जितनी मिल गई है, उतनी रहेगी या अब आप पैदा नहीं कर सकते।

पहले तो यह समझ लीजिए कि इसका बीज तो संसार के प्रत्येक प्राणी में रहता ही है। मनुष्य में यह सब प्राणियों से अधिक है। मनुष्यों में भी कम-अधिक सभी में है। जिनमें कम है, वे बढ़ा सकते हैं, आत्मविश्वास में वृद्धि करने के लिए आप अपने गौरव को समझिए, स्वयं को पहचानिए और अपना संसार में महत्व समझिए। फिर आप देखेंगे कि आपकी समस्त मानसिक शक्तियाँ केंद्रित होती जा रही हैं। आप आत्मविश्वास के साथ बढ़ते जा रहे।

आपकी अभिलाषा यदि यह है कि आपको निश्चित रूप से सफलता ही मिले या आप महान बनें, तो आप अपने आदर्श को उन्नत बनाएँ, ऊँचा ही रखें और उसे पाने के लिए मन, कर्म और वचन से जुटे रहें।

मानसिक शक्तियाँ प्रबल होने पर भी यदि आत्मविश्वास के साथ उन्हें संचालित नहीं किया जाएगा तो वे आपके कुछ भी काम नहीं आएँगी। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर पाएँगे, क्योंकि मानसिक शक्तियों पर आत्मविश्वास का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। ये शक्तियाँ आत्मविश्वास को संचालित करती हैं। आत्मविश्वास ही एक ऐसी शक्ति है, जो सारी शक्तियों से प्रबल है और इसके बिना दूसरी शक्तियाँ भी मनुष्य को उसके लक्ष्य तक नहीं पहुँचा सकतीं।

आत्मविश्वासी व्यक्ति जब आपना काम करते हैं, तो उसकी इच्छित वस्तुएँ स्वयं आकर्षित होने लगती हैं। आत्मविश्वास एक बार पैदा हो जाए तो फिर सारी दूसरी शक्तियाँ भी आपकी आज्ञानुसार चलेंगी। जब भी आप चाहेंगे वे आपको योगदान देंगी। आपकी सब इच्छाएँ पूर्ण होती चलती जाएँगी। इच्छाशक्ति इतनी प्रबल हो जाती है कि व्यक्ति जो चाहता है, वही कर सकता है।

आप सदैव यह मानकर चलिए कि जो आप कर रहे हैं, वह अच्छा ही है और उसमें सफलता निश्चित है। न तो आप गलत करेंगे और न असफल होंगे। सफलता पर शंका करके कार्य से दूर मत भगाइए। याद रखिए—“असफलता के विचार असफलता को ही बुलाएँगे और सफलता के विचार सफलता को बुलाते हैं।”

इसलिए, दृढ़ आत्मविश्वास और संकल्प के साथ—

सदा सफलता के स्वर्ज देखिए।

सफलता की आशा कीजिए।

आपका लक्ष्य सफलता होना चाहिए।

अपनी शक्तियों और योग्यताओं पर आपको प्रबल भरोसा होना श्रद्धा और विश्वास आपको सहारी देते हैं।

□□□